Edit with WPS Office

प्रस्तुति: पूजा भगत

वापसी(प्रश्न- उत्तर)

प्रश्न 1.

गजाधर बाबू किस नौकरी से रिटायर हुए थे?

उत्तर:

गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी से रिटायर हुए थे।

प्रश्न 2.

परिवार वालों ने गजाधर बाबू के रहने की व्यवस्था कहाँ की थी?

उत्तर:

पहले दिन बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए, पतली-सी चारपाई डाल दी गई थी। तत्पश्चात् पत्नी की कोठरी (भण्डारघर) में उनकी चारपाई डाल दी गई थी।

Edit with WPS Office

प्रश्न 3.

गजाधर बाबू ने अपनी नौकरी में कितने वर्ष अकेले व्यतीत किए थे?

उत्तर:

गजाधर बाबू ने अपनी नौकरी में अपने परिवार की बेहतरी तथा बच्चों की उच्च शिक्षा की आस में परिवार से दूर रेलवे क्वार्टर में अकेले पैंतीस वर्षों की लम्बी अवधि व्यतीत कर दी।

प्रश्न 4.

गजाधर बाबू के लिए मधुर संगीत क्या था?

उत्तर:

पटरी पर रेल के पहियों की खट-खट गजाधर बाबू के लिए किसी उच्च कोटि के मधुर संगीत की तरह ही था।

प्रश्न 5.

गजाधर बाबू के स्वभाव की दो विशेषताएँ बतलाइए।

उत्तर:

Edit with WPS Office

गजाधर बाबू के स्वभाव की दो विशेषताएँ थीं-

वे स्नेही व्यक्ति थे तथा स्नेह की आकांक्षा रखते थे।

वे परिवार के सदस्यों के साथ मनोविनोद करना चाहते थे।

प्रश्न 6.

गजाधर बाबू के कुल कितने बच्चे थे? सभी के नाम लिखिए।

उत्तर:

गजाधर बाबू के कुल चार बच्चे थे-बड़ा बेटा अमर,छोटा बेटा नरेन्द्र,बड़ी बेटी। कान्ति तथा छोटी बेटी बसन्ती।

प्रश्न 1.

संसार की दृष्टि में गजाधर बाबू का जीवन किस प्रकार सफल कहा जा सकता था?

Edit with WPS Office

उत्तर:

संसार की दृष्टि में गजाधर बाबू का जीवन सफल कहा जा सकता है क्योंकि सफलतापूर्वक पैंतीस वर्ष तक रेलवे की नौकरी करने के पश्चात् सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था। बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर दी थीं। दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे।

प्रश्न 2.

घर जाने की खुशी होने के बाद भी गजाधर बाबू का मन क्यों दुःखी था?

उत्तर:

घर जाकर पत्नी, बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना से गजाधर बाबू का मन बहुत खुश था, परन्तु पैंतीस वर्ष तक रेलवे के क्वार्टर में रहते हुए वहाँ के परिचित स्नेह-आदरमय, सहज संसार से सदैव के लिए नाता टूटने तथा सामान हट जाने से क्वार्टर की कुरूपता को देखकर उनका मन एक विचित्र विषाद (दुःख) का अनुभव कर रहा था।

Edit with WPS Office

प्रश्न 3.

अमर को अपने पिताजी से क्या शिकायत थी?

उत्तर:

अमर को अपने पिताजी से बहुत शिकायतें थीं। उसका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पड़े रहते हैं,कोई आने-जाने वाला हो, तो कहीं बिठाने की जगह नहीं। अमर को अब भी वह छोटा-सा समझते हैं और मौके-बेमौके टोक देते हैं। बहू को काम करना पड़ता था। अमर को हर चीज में पिताजी का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था। कहता था, बूढ़े आदमी हैं चुपचाप पड़े रहें।

प्रश्न 4.

बसन्ती गजाधर बाबू के किस कथन से रूठ गई थी?

उत्तर:

कपड़े बदलकर शाम को जब बसन्ती पड़ोस में शीला के घर जा रही थी, तब गजाधर बाबू ने उससे कड़े स्वर में कहा कि कोई

Edit with WPS Office

जरूरत नहीं है, अन्दर जाकर पढ़ो। इस कथन से बसन्ती रूठ गई थी।

प्रश्न 5.

गजाधर बाबू ने भोजन बनाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी और क्यों?

उत्तर:

गजाधर बाबू ने सुबह का खाना बनाने की जिम्मेदारी बहू को तथा शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी बसन्ती को सौंपी। क्योंकि उनकी पत्नी बूढी हो चली थी तथा उसके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची थी कि वह अकेले पूरे घर का काम कर सके। साथ ही,गजाधर वाबू को लड़की का बाहर जाना पसन्द नहीं था, इसलिए वह उसे कार्य में व्यस्त रखना चाहते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

गजाधर बाबू का अस्तित्व उनके परिवार का हिस्सा क्यों नहीं

Edit with WPS Office

बन पाया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

गजाधर बाबू निम्न मध्यमवर्गीय समाज के नौकरी-पेशा पात्र हैं जिन्होंने घर-परिवार से दूर अकेले रहकर पैंतीस वर्ष इस प्रतीक्षा में व्यतीत कर दिये कि सेवानिवृत्ति के पश्चात् वह अपने परिवार के साथ रहेंगे और उसी आशा तथा सुखद कल्पना के साथ वह अपने घर को लौटते हैं। परिवार में आने पर उनका कोई गर्मजोशी से स्वागत नहीं होता बल्कि उनको एक बन्धन के रूप में माना जाने लगता है। वे घर को अपने अनुसार चलाना चाहते हैं, सबके मध्य बैठकर पैंतीस वर्षों के एकान्त जीवन को विस्मृत करना चाहते हैं। लेकिन सबके मध्य वह और भी एकाकी हो जाते हैं। पत्नी अचार-दाल-चीनी में व्यस्त है,बच्चे अपने-अपने व्यक्तिगत आनन्द में व्यस्त हैं,उनके रहने का स्थान भण्डारघर की चारपाई है। पत्नी शिकायत करती है पर उसमें सहानुभूति नहीं होती। बड़ा बेटा उनके आने पर अपनी गृहस्थी अलग बसाने की माँग करने लगता है। उनकी अनुपस्थिति में उनका परिवार अपनी तरह से जीने का आदी हो चुका है, अब गजाधर बाबू का हस्तक्षेप उन सबको पसन्द नहीं। यहाँ तक कि पुत्री भी पिता से सहमत नहीं। उस परिवार के लिए अब गजाधर बाबू केवल आर्थिक आधार भर हैं।

Edit with WPS Office

इन सब घटनाओं के कारण ही गजाधर बाबू का अस्तित्व उनके परिवार का हिस्सा न बन सका, जो आधुनिक युग का समाज को सटीक उपादान है।

प्रश्न 2.

“वह जीवन अब उन्हें एक खोई निधि-सा प्रतीत हुआ।” इस कथन को पाठ के आधार पर समझाइए।

उत्तर:

परिवार से दूर रेलवे क्वार्टर में पैंतीस वर्ष व्यतीत करने के बाद गजाधर बाबू घर लौटते हैं तथा सोचते हैं कि अब परिवार के साथ रहकर वह सुखी व सन्तोषी जीवन बितायेंगे। पर उन्होंने पाया कि परिवार में उनका अस्तित्व मात्र धनोपार्जन तक ही सीमित है, तो उन्हें अपनी रेलवे की नौकरी के साथ बिताया समय याद आया-वह बड़ा-सा खुला हुआ क्वार्टर, निश्चिन्त जीवन, गाड़ियों के आने पर स्टेशन की चहल-पहल, रेल के

Edit with WPS Office

पहियों की खट-खट आवाज, सेठ रामजीमल के मिल के लोग.....। नौकरी का वह समय उन्हें खोई हुई निधि के समान लगा। दूसरी ओर जब वह नौकरी पर थे,तो घर की सुखद कल्पनाएँ थीं। पत्नी का कोमल स्पर्श,उसकी मनमोहक मुस्कान, बच्चों के मनोविनोद आदि को पाने की कल्पनाएँ, उन्हें धनवान बना देती थीं। घर लौटने पर उन्हें इन सबके स्थान पर उपेक्षा ही मिली। घर में उनके लिए कोई स्थान नहीं था। सब उनसे बचना चाहते थे। दोनों ही स्थितियों में उन्हें अपना जीवन किसी खोई हुई निधि के समान लगा। उन्हें लगा कि वह जिन्दगी के द्वारा ठगे गये हैं। जो कुछ भी उन्होंने चाहा, वह उन्हें नहीं मिला।

प्रश्न 3.

गजाधर बाबू के घर जाने से पहले उनके घर की क्या स्थिति थी?

उत्तर:

गजाधर बाबू के घर जाने से पहले उनका बड़ा बेटा अमर घर का मालिक बनकर रहता था। बहू को कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था। अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था, अन्दर से चाय-नाश्ता तैयार होकर आता रहता था। बसन्ती को

Edit with WPS Office

भी वही अच्छा लगता था। पड़ोस में शीला के घर देर-देर तक रहना बसन्ती की आदत थी। बहू कुछ काम-काज करती नहीं थी। सास सारे दिन काम में लगी रहती थी। छोटा बेटा नरेन्द्र अपने ही ढंग से जीवन जी रहा था। बाजार का सारा काम नौकर करता था। उनके घर का रहन-सहन और खर्च हैसियत से कहीं ज्यादा था। घर की सम्पूर्ण स्थिति में धन देने के अतिरिक्त गजाधर बाबू का कोई स्थान नहीं था।

प्रश्न 4.

'वापसी' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

लेखिका उषा प्रियंवदा ने प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'वापसी' सटीक ही रखा है। इसके दो आधार हैं पहला आधार है-गजाधर बाबू 35 वर्ष रेलवे क्वार्टर में अकेले रहकर अनेक आत्मीय आशाओं को लेकर वापस घर आते हैं,जो केवल मृग मारीचिकाएँ ही सिद्ध होती हैं। यहाँ वापसी एक व्यंग्य व दुःखान्त घटना बन जाती है। इस वापसी के सुख में दुःख था।

Edit with WPS Office

दूसरा आधार है-परिवार में रहने पर भी गजाधर बाबू अपरिचित व मेहमान के अस्थायी रूप में रहते हैं। उनका जीवन भार बन जाता है। यहाँ तक कि उनकी पत्नी भी उनकी उपेक्षा करती है, आत्मीयता का पूर्ण अभाव दिखाती है। उस समय सेठ रामजीमल की नौकरी के लिए चीनी मिल में लौट जाना भी वापसी' है। यह वापसी जीवन की सच्चाई तथा बुढ़ापे की यथार्थता को प्रकट करती है। इस वापसी के दुःख में सुख था। उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट है कि कहानी का शीर्षक 'वापसी' उचित ही है।

प्रश्न 5.

गजाधर बाबू ने पत्नी के स्वभाव में क्या-क्या परिवर्तन देखे?

उत्तर;

पहले पत्नी दो-दो बजे तक आग जलाये बैठी रहती और गजाधर बाबू के आते ही रसोई की ओर दौड़ती और गरम खाना बनाकर देती। सेवानिवृत्ति के पश्चात् वह पूजाघर से देर से निकलती है और रसोई में जाकर बड़बड़ाने लगती है। उधर गजाधर बाबू चाय की प्रतीक्षा करते रहते हैं। प्रेमपूर्ण वार्तालाप

Edit with WPS Office

के बदले अब वह हर समय शिकायतें करती, जिनमें आत्मीयता व सहानुभूति का पूर्ण अभाव होता। पत्नी का कोमल स्पर्श,सुन्दरता,मनोविनोद आदि कटाक्ष वाणी में बदल गये थे। जिस नारी का सर्वस्व पति था, वह आज केवल भोजन की थाली सामने रखकर सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। पति, पत्नी के जीवन का केन्द्र नहीं है। उसकी दुनिया घी-चीनी-अचार के डिब्बे हैं। गजाधर बाबू के बोलने पर वह उन्हें न बोलने के लिए टोक देती है। पति के बजाय बच्चों की त्रुटि पर भी बच्चों का पक्ष लेकर पति की उपेक्षा व अपमान करती है। बात-बात पर झुंझला उठती है। पति के साथ नौकरी पर जाने के लिए मना कर देती है। पत्नी के इन परिवर्तनों को देखकर गजाधर बाबू हताश हो उठते हैं तथा चीनी मिल में नौकरी करने चले जाते हैं।

प्रश्न 6.

“अरे नरेन्द्र बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं है।” इस पंक्ति के माध्यम से लेखिका क्या कहना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

Edit with WPS Office

उत्तर:

घर में अपने अस्तित्व के नकारे जाने के दुःख से दुःखी होकर गजाधर बाबू पुराने शहर की एक चीनी मिल में नौकरी करने चले जाते हैं। उनके साथ ही उनका सामान भी चला जाता है। उनके अस्तित्व का बोध कराने वाली चारपाई घर पर ही रह जाती है। उस चारपाई को देखकर उनकी पत्नी उसे भी हटाने का आदेश देती है, क्योंकि उनके अस्तित्व का अनुभव होने पर उन सबको घर में विघटन,क्लेश, अव्यवस्था, असम्मान की भावना पनपने लगती है। पत्नी पूर्णरूपेण गृहस्थी को समर्पित हो गई है। गृहस्थी के अतिरिक्त उसे कुछ अच्छा नहीं लगता है। लेखिका के इन शब्दों द्वारा मनोविज्ञान के सूक्ष्म तन्तुओं का ज्ञान होता है। मनुष्य ऐसी परिवर्तन की स्थिति को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता, जिसके कारण उसकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में बाधा पड़ती हो। गजाधर बाबू उस परिवार के लिए मात्र आर्थिक आधार हैं,परिवार के प्रति उनका कोई संवेदनात्मक रिश्ता नहीं है।

प्रश्न 7.

गजाधर बाबू दोबारा चीनी मिल की नौकरी पर क्यों गये?

उत्तर:

Edit with WPS Office

गजाधर बाबू ने घर वापसी पर पहले ही दिन देखा कि जिस अकेलेपन को वह परिवार के साथ दूर करने की सोचकर आये थे, उसी परिवार ने उन्हें अकेला छोड़ दिया। पत्नी भी पति को चाय नाश्ता न देकर अपनी शिकायतें करने लगती है। गजाधर बाबू बेटी को शाम के समय पड़ोस में जाने के लिए मना करते हैं और शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी देते हैं, बहू को सास के साथ काम में हाथ बँटाने की कहते हैं। आय कम होने के कारण खर्चा कम करने के उद्देश्य से नौकर का हिसाब कर देते हैं। इन बातों से पुत्री,बहु व पुत्र नाराज हो जाते हैं, उन्हें यूँ पिताजी की दखलअन्दाजी बिल्कुल पसन्द नहीं आती। जिस घर को उन्होंने एक-एक पैसा जोड़कर बनवाया, उसी घर में गजाधर बाबू के रहने के लिए जगह नहीं है। भण्डारघर बने पत्नी के कमरे में उनकी चारपाई डाल दी गयी। पत्नी शिकायत करती है पर आत्मीयता से सुझाव नहीं माँगती है। बच्चे पिता को हुण्डी समझते हैं। बड़ा बेटा अलग होने की माँग करने लगता है। इन सब घटनाओं से गजाधर बाबू यह अनुभव करते हैं कि वह मात्र धनोपार्जन का साधन हैं, उस परिवार में उनका कोई अस्तित्व नहीं है तथा वह उस परिवार का अंग नहीं बन सकते। मुख्य रूप से पत्नी की उपेक्षा ने उन्हें चीनी मिल की नौकरी पर जाने को बाध्य कर दिया।

Edit with WPS Office

प्रश्न 8.

'वापसी' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर:

उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी पारिवारिक सम्बन्धों की संवेदनहीनता पर आधारित है। इसका उद्देश्य पारिवारिक विसंगतियों तथा बिखराव को अंकित करना है। रेलवे में नौकरी करने वाले गजाधर बाबू घर से दूर अकेले सरकारी स्वार्टर में रहते हैं। पत्नी, एक बेटी, दो पुत्र तथा पुत्र-वधू घर के प्राणी हैं जो शहर के मकान में रहते हैं। नौकरी से सेवा-निवृत्त हो जब वे घर लौटते हैं तो पारिवारिक आत्मीयता की बड़ी उम्मीदें उनके मन में हैं, परन्तु घर आने पर वे सब भ्रम सिद्ध होती हैं। वे घर को अपने ढंग से चलाना चाहते हैं, किन्तु उन्हें हर स्तर पर उपेक्षा ही मिलती है। बेटे,बेटी, पुत्र-वधू के साथ पत्नी भी उनके प्रति उदासीन ही है। वे जो सोचकर आए थे उसके विपरीत भाव परिवार में उन्हें मिलता है। उन्हें अपनी उपस्थिति परिवार में विक्षोभ पैदा करने वाली लगने लगती है। फलस्वरूप वे सेठ रामजीमल की मिल में पुन: नौकरी करने वहीं चले जाते हैं जहाँ से वे सेवा-निवृत्त हुए थे।

Edit with WPS Office

कहानी आज की संवेदनहीनता की गिरावट को प्रस्तुत करने में सफल रही है। निरन्तर असहिष्णु बनती जा रही युवा पीढ़ी के स्वच्छंद व्यवहार का दुष्परिणाम पुरानी पीढ़ी झेलती है। व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के बढ़ते क्रम में यह कहानी पारिवारिक संवेदनाओं की वापसी का प्रयास भी है।